मासिक

मधुमती

वर्ष 58, अंक 07-08 : जुलाई-अगस्त, 2018

सह-सम्पादक
कुन्दन माली

प्रवन्ध सम्पादक
डॉ. विनीत गोधल

प्रवन्ध सहयोग
राजेश मेहता

आवरण
चेतन औदिच्य मो. 096020 15389

भीतरी रेखांकन
दिव्या ध्रुविल दोषी मो. 097242 10848

इस अंक का मूल्य : 40/- (एक प्रति)

वार्षिक शुल्क : 240/-
(वार्षिक शुल्क केवल धनादेश, बैंक-ड्राफ्ट या नकद सचिव, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के नाम से ही भेजें)

प्रकाशक
सचिव
राजस्थान साहित्य अकादमी
सेक्टर-4, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)- 313 002
दूरभाष : 0294-2461717

मुद्रक
न्यूट्रेक ऑफसेट
13, भोपा मगरी, न्यूट्रेक नगर, हिरण मगरी, सेक्टर 3, उदयपुर (राज.)-313 001
दूरभाष : 0294-2466120 मो. 9414160046

'मधुमती' में प्रकाशित लेखों / रचनाओं में व्यक्त विचार / तथ्य लेखकों के अपने हैं। अकादमी से इनकी सहमति होना आवश्यक / अनिवार्य नहीं है और न ही अकादमी इसके लिए उत्तरदायी है।

तारतम्य

सम्पादकीय	इन्दुशेखर तत्पुरुष	07
सर्ग-खण्ड		
• हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान	भारतेन्दु हरिशचन्द्र	16
• हिन्दी और हिन्दुस्तानी	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	21
• हिन्दी भाषा और उसका साहित्य	महावीर प्रसाद द्विवेदी	24
• हिन्दी भाषा कैसी होनी चाहिए	निराला	38
• हिन्दी का विरोध	माखनलाल चतुर्वेदी	42
• हिन्दी प्रचार : उसकी परम्परा, जोखिम और गतिविधि	माखनलाल चतुर्वेदी	47
• भाषा-अनुशासन, संस्कृति और विश्व हिन्दी सम्मेलन	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	49
• भाषा का प्रश्न	रांगेय राघव	61
• हिन्दी साहित्य सम्मेलन	मोहनदास करमचंद गाँधी	71
• हिन्दी, अंग्रेजी और देशी भाषाएँ	राम मनोहर लोहिया	76
• हिन्दी यहाँ है	दीनदयाल उपाध्याय	91
• हिन्दी का विरोध निराधार	दीनदयाल उपाध्याय	95
प्रतिसर्ग-खण्ड		
• हिन्दी की जातीय संस्कृति : सार्वदेशिक हिन्दी और भारतीय भाषाओं के बीच सार्थक संवाद की आवश्यकता	रमेशचन्द्र शाह	99
• विश्वभाषा हिन्दी को अहिन्दी भाषियों की देन	कलानाथ शास्त्री	103
• हिन्दी : उत्तरआधुनिक की संभावनाओं के संदर्भ में	कृष्ण कुमार शर्मा	107
• वैश्वीकरण के दौर में भाषा, साहित्य और संस्कृति	चमनलाल गुप्त	115
• हिन्दी भाषा और राष्ट्रीय अस्मिता	श्रीराम परिहार	122
• हिन्दी और हमारी सांस्कृतिक चेतना का विकास	विनोद शाही	131

- हिन्दी भाषा : सामर्थ्य और सम्भावना — उदय प्रता ह — 134
- विश्व भाषाओं में बढ़ती हिन्दी की अहमियत — सवाई सिंह शेखावत — 140
- मुद्रण माध्यम और हमारी हिन्दी — दुर्गाप्रसाद अग्रवाल — 144
- हिन्दी का अन्तर्भाषिक सम्बन्ध और वैशिष्ट्य — कुन्दन माली — 148
- हिन्दी : 'विश्वभाषा' की सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ — मलय पानेरी — 154
- हिन्दी की वैश्विक उपस्थिति — आशीष सिसोदिया — 161
- हिन्दी भाषा : वैश्विक स्वरूप — नवीन नन्दवाना — 167
- भारतीय आत्म-गौरव की धरोहर हिन्दी — भगवती प्रसाद गौतम — 174
- विदेशों में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज की भूमिका — हुसैनी बोहरा — 179
- वैश्विक स्तर पर हिन्दी को समृद्ध करती ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया — आकांक्षा यादव — 188
- हिन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृति — महाश्वेता चतुर्वेदी — 194
- ज्ञानभाषा हिन्दी विश्वभाषा की ओर — सिद्राम खोत — 198
- संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिन्दी को मान्यता — लीला मोदी — 201
- वैश्विक भाषिक प्रतिमान और हिन्दी — राजेन्द्र कुमार सिंघवी — 207
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में हिन्दी का योगदान — प्रवीण कुमार सहगल — 211
- बहुभाषिकता का महत्त्व और राजभाषा हिन्दी — जे. आत्माराम — 214
- हिन्दी : संस्कृति, समाज और संस्कार की भाषा — अखिलेश आर्येन्दु — 218
- वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी - दशा और दिशा (शोध लेख) — ज्योति शर्मा — 223
- विश्व भाषा के पथ पर अग्रसर हो रही हिन्दी (शोध लेख) — गोपीराम शर्मा — 233
- हिन्दी भाषा का विस्तार और आधुनिकीकरण — निर्मला शर्मा — 240

उपसर्ग खण्ड

- **साहित्यिक परिदृश्य** — 243

संपादकीय...

राष्ट्रभाषा हिन्दी और अनुच्छेद 351 पर विचार करते हुए

इन्दुशेखर तत्पुरुष

राष्ट्रभाषा या राजभाषा - जिस भी रूप में हम मानें - हिन्दी के प्रति राज्य के (और हमारे) कर्तव्य को निर्धारित करने वाले एवं अक्सर उद्धृत किये जाने वाले संविधान के अनुच्छेद 351 से हिन्दी के विचारक, प्रचारक और निष्ठावान कार्यकर्ता परिचित ही होंगे। किन्तु इस अनुच्छेद में निहित आशयों और अभिप्रायों की चर्चा गहराई के साथ की जानी आवश्यक है। यह इसलिए जरूरी है कि हिन्दी को समृद्ध करने के संकल्प के साथ ही उसकी सीमाओं एवं सामर्थ्य तथा उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों के संकेत भी हमें इसी अनुच्छेद में मिलते हैं। ये वे महत्त्वपूर्ण संकेत हैं जिनको पकड़े बिना हिन्दी की विकास यात्रा का कोई भी प्रारूप अधूरा ही रहेगा। दूसरा यह भी कि इस अनुच्छेद के निहितार्थों को जाने बिना हम सतही स्तर पर जो अर्थ ग्रहण करते हैं वह न केवल भ्रमित करने वाला होता है अपितु हिन्दी के स्वाभाविक विकास और उसके प्रचार-प्रसार में बाधक भी सिद्ध हो सकता है। अस्तु, उक्त अनुच्छेद-पाठ का विखण्डन-विश्लेषण करते हुए हम उनमें अन्तर्निहित अर्थों का अवलोकन करते हैं।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अन्तर्गत हिन्दी भाषा के प्रति भारतीय संघ का कर्तव्य इस प्रकार निर्धारित किया गया है -

उल्लेखनीय हैं। डॉ. तात्याना, पर्नोवस्की ने भी हिन्दी की कई प्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद किया है। यहाँ प्रेमचन्द का साहित्य बहुत लोकप्रिय है।

इनके अतिरिक्त यूगोस्लाविया, फ्रांस, फिनलैंड, बल्गारिया, बोलीविया, मलेशिया, मैक्सिको, म्यांमार, रोमानिया, वियतनाम, सिंगापुर, स्वीडन, सऊदी अरब, हंगरी, मैकडोनिया आदि देशों में हिन्दी का प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में दिखाई देता है।

रूस में हिन्दी की समझ रखने वाले कई रूसी विद्वान हुए हैं जिनमें बरान्निकोव, अलेक्सान्द्र सेन्केवच, साजनोवा, एवगेनी, पेत्रोविच, चेलीशेव आदि प्रमुख हैं। हिन्दी प्रेम बढ़ा है तो वह राजकपूर के फिल्मी गानों के कारण बढ़ा है। यहाँ के कई प्रगतिशील साहित्यकारों का झुकाव रूस की तरफ रहा है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में तो हिन्दी का प्रचार-प्रसार बहुत पहले से है। भारतीय प्रतिभाएँ यहाँ कई वर्षों से रह रही हैं। अमेरिका के कई नागरिक हिन्दी से जुड़े हुए हैं, इनमें एक विद्वान पिंकाट तो बहुचर्चित है क्योंकि वे भारतेन्दु जी के मित्र थे। वे हिन्दी सेवा में आजीवन संलग्न रहे। इनके अतिरिक्त भारतीय विद्वान वेदप्रकाश बटुक, तुलसी जयरामन, कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह आदि ने भी अमेरिका में हिन्दी का विस्तार किया। कुँवर चन्द्रप्रकाश ने वहाँ 'अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति' की स्थापना की। अमेरिका के उद्योगपतियों में हिन्दी के प्रति विशेष लगाव दिखाई देने लगा है। बिल गेट्स ने हिन्दी माइक्रोसॉफ्ट का आविष्कार करके इस भाषा को विश्वभाषा बना दिया। अमेरिका के प्रायः हर विश्वविद्यालय में हिन्दी, हिन्दुस्तानी, भारत विद्या, प्राच्य विद्या, बौद्ध धर्म आदि का अध्ययन होता है। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति और हिन्दी जानने समझने के लिए एक सरकारी संस्था 'अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़' स्थापित हैं, जो अमेरिकी बच्चों को भारत आकर हिन्दी भाषा की शिक्षा देता है।

हिन्दी विश्व-मानव के विचार-विनिमय का माध्यम रही है। भारतीय संस्कृति तथा विश्व-बंधुत्व की विरासत उसे संस्कृत से मिली है। आज संचार के साधन बढ़ गए हैं। विश्व सिमटता जा रहा है। आज विश्वस्तर पर हिन्दी को अंग्रेजी से दो-दो हाथ करने पड़ रहे हैं। हिन्दी साहित्य में मानव जीवन के उत्कर्ष का सारा प्रकाश समाहित है। खेद का विषय है कि हिन्दी का व्यापक फलक होते हुए भी यह संयुक्त राष्ट्र की अभी तक मान्य भाषा नहीं बन पाई है। जिस दिन हिन्दी विश्वस्तरीय भाषा मान ली जाएगी तो वह भारत की सम्पर्क भाषा अपने आप हो जाएगी।

संदर्भ : हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, लेखक - प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, संपादक - प्रो. कैलाश देवी सिंह, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ, 2012

हिन्दी विभाग, मो.ला.सु.वि.वि., उदयपुर

नवीन नन्दवाना

हिन्दी भाषा : वैश्विक स्वरूप

''भाषा की शक्ति कठिन नहीं, आसान शब्दों के प्रयोग से निखरती है। भाषा का सौंदर्य तब बढ़ता है, जब लेखक उन सभी शब्दों को सहानुभूति से देखता है जो जनता की जीभ पर चढ़े हुए हैं। कोई भी शब्द केवल इसीलिए ग्राह्य नहीं होता कि वह संस्कृत-भंडार का है, न शब्दों का अनादर केवल इसीलिए उचित है कि वे अरबी या फारसी भंडार से आए हैं। जो भी शब्द प्रचलित भाषा में चले आ रहे हैं, जो भी शब्द सुगम, सुंदर और अर्थपूर्ण हैं, साहित्यिक भाषा भी उन्हीं शब्दों को लेकर काम करती है, यह विचार आज भी समीचीन समझा जाता है।'' संस्कृति के चार अध्याय (पृष्ठ 325) में भाषा के प्रयोग व शब्द चयन पर विचार करते हुए दिनकर इस बात को साफ तौर पर कहना चाहते हैं कि सहज, सरल व प्रचलित शब्दों का प्रयोग भाषा के निखार और जन-मन तक पहुँचाने के लिए अनिवार्य है।

हिन्दी का आज जो हम वैश्विक स्वरूप देख रहे हैं। वह सदियों की इसी साधना का परिणाम है। हमारे कवियों व लेखकों ने प्रायः इस बात का मोह त्याग दिया कि उनके लेखन से चमत्कार व्यंजित हों। वे सदैव अपनी बात को जन-मन तक पहुँचाकर शुष्क हृदय में संवेदना जगाने के लिए तत्पर रहे। शायद तभी हिन्दी के ख्यातनाम कवि सुमित्रानंदन पंत ने लिखा कि ''तुम वहन कर सको, जन-मन मेरे विचार। वाणी मेरी क्या तुम्हें चाहिए अलंकार।'' इसी कारण हिन्दी जो कभी भारतीय भाषा के रूप में जानी जाती थी, आज धीरे-धीरे वैश्विक स्वरूप ग्रहण कर रही है। हम

भाषा को लेकर शुद्धता व संस्कृतनिष्ठता के आग्रह से बचे रहे, तभी न केवल भारतवासियों ने बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने आज हमारी भाषा को गले लगाया है।

हिन्दी ने समय के साथ अपने क्षेत्र व भाषा-भाषियों की संख्या में अप्रतिम वृद्धि की है। भाषा वैज्ञानिक किसी भाषा और खासतौर पर हिन्दी के विकास क्रम पर विचार मंथन करते हुए भले ही व्यक्ति बोली, उपबोली, बोली, उपभाषा और भाषा जैसे मानकों पर विचार कर यह दर्शाते रहे हों कि हिन्दी उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ की प्रमुख भाषा है, किन्तु आज का वास्तविक सत्य यह है कि विज्ञापन, बाजार, पर्यटन और तकनीकी विकास आदि ने हिन्दी को न केवल भारत के सम्पूर्ण राज्यों व क्षेत्रों में पहुँचाया है वरन् विदेशी धरा पर भी आज हिन्दी ने अपनी पहुँच बना ली है। वहाँ हिन्दी पठन-पाठन, साहित्य-लेखन और व्यापार-व्यवहार की भाषा के रूप में व्यवहृत हो रही है।

विज्ञान व तकनीकी विकास तथा बाजार आदि ने हिन्दी को वैश्विक स्वरूप प्रदान किया है। इसी कारण आज विदेशी भाषाओं व विदेश की धरती पर हम हिन्दी शब्दों की पहुँच महसूस कर सकते हैं। अब ऐसा नहीं है कि केवल हिन्दी ही विदेशी भाषाओं के शब्दों को स्वीकार कर रही है बल्कि विदेशी भाषाएँ भी हिन्दी को स्वीकारने लगी हैं। 'हिन्दी भाषा : क्षेत्र, स्वरूप तथा विकास' विषय पर विचार मंथन करते हुए प्रो. महावीर सरन जैन यह दर्शाते हैं कि न केवल हिन्दी ने विदेशी भाषाओं [illegible]ब्द ग्रहण किए हैं बल्कि अंग्रेजी ने भी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को स्वीकारा है। वे लिखते हैं कि - "ऐसा नहीं है कि केवल हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में ही अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग होता है और अंग्रेज़ी बिल्कुल अछूती है। अंग्रेजी में संसार की उन सभी भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होते हैं जिन भाषाओं के बोलने वालों से अंग्रेजी का सामाजिक सम्पर्क हुआ। चूँकि अंग्रेजी का भारतीय समाज से भी सम्पर्क हुआ, इस कारण अंग्रेजी ने हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का भी आदान किया है। यदि ब्रिटेन में इंडियन रेस्तरां में समोसा, इडली, डोसा, भेलपुरी खाएँगे, खाने में 'करी', 'भुना आलू' एवं 'रायता' माँगेंगे तो उन्हें उनके वाचक शब्दों का प्रयोग करना पड़ेगा। यदि भारत का 'योग' करेंगे तो उसके वाचक शब्द का भी प्रयोग करना होगा और वे करते हैं। भले ही उन्होंने उसको अपनी भाषा में 'योगा' बना लिया है, जैसे हमने 'हॉस्पीटल' को 'अस्पताल' बना लिया है।"

नवइलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के लिए हिन्दी का धीरे-धीरे अनुकूल बनना भी उसे वैश्विक पहचान दिलाने में कारगर सिद्ध हुआ। एक दौर था तब हिन्दी को लेकर कम्प्यूटर कार्य करना बहुत दुष्कर माना जाता था। फोंट की समस्या इस कदर थी कि हिन्दी में लिखित सामग्री को एक से दूसरे कम्प्यूटर पर भेजना समस्या का कार्य होता था, कारण कि फोंट बदल जाते थे। अब मंगल फोंट के कारण हम इस समस्या से निजात पा चुके हैं। अब यह समस्या बीते

दिनों की बात हो गई। लिप्यंतरण ने हमारे कार्य को आसान बना दिया है। अब हिन्दी फोंट परिवर्तक की मदद लेकर हम अपना कार्य आसानी से कर सकते हैं।

आज कई ई-शब्दकोष भी उपलब्ध हैं। शब्दमाला, हिन्दी शब्द तंत्र, वर्धा हिन्दी शब्दकोश के माध्यम से देश-विदेश का व्यक्ति आसानी से शब्दों के अर्थ खोजने में सक्षम हुआ है। 'कुशल हिन्दी वर्तनी जाँचक' के माध्यम से हम वर्तनी का सही प्रयोग करने में समर्थ हुए हैं। हिन्दीतर लोगों के लिए इस प्रकार के सॉफ्टवेयर बड़े लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। 'स्पीच टू टेक्स्ट' अर्थात् 'श्रुतलेखन' के लिए भी सी-डेक पुणे ने एक सॉफ्टवेयर तैयार किया है जो आपके बोले हुए को टाइप कर देता है।

आगत का स्वागत हमारी संस्कृति है, किन्तु इसका आशय यह कदापि नहीं है कि हम अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपने स्वाभिमान को भूल जाएँ। गाँधी जी का भाषा विषयक मत था कि किसी भी देश की गरिमा उसकी अपनी सभ्यता, संस्कृति' और भाषा को स्वीकारने में है। अत: गुजराती होते हुए भी गाँधी जी राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकारने के पक्षधर थे। भाषा की महत्ता का स्मरण करते हुए इन्द्रनाथ चौधरी अपने लेख 'हिन्दी आ चुकी है...' में लिखते हैं कि - "भाषा नदी की धार है, उसे रोका नहीं जा सकता - बाँध बाँधकर यदि रोकने की कोशिश करें तो नदी दूसरे स्थानों से बहना शुरू कर देगी।"

हमारी हिन्दी आज केवल भारत तक नहीं सीमित रही है। इसने सम्पूर्ण विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज करवा दी है। कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अपने लेख 'वैश्विक संदर्भ में हिन्दी' में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि - "भाषा की व्यापकता और व्यवहार-क्षमता की दृष्टि से हिन्दी मातृभाषा और अन्य भाषा दोनों रूपों में भारत में सर्वाधिक बोली जाती है। यह इसका राष्ट्रीय संदर्भ है। भारत की अन्य भाषाओं के साथ सतत् सम्पर्क होने के कारण यह जातीय सभ्यता और संस्कृति का प्रबल आधार बन गई है। इसका अन्तरभारतीय स्वरूप सामने आया है। इसी कारण यह भारत में राजभाषा के पद पर गौरवान्वित हुई। इसी के साथ-साथ इसने विश्व के सभी देशों में अपनी पताका फहरा दी है। इसका स्थान विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीन भाषाओं - हिन्दी, चीनी, अंग्रेजी के अन्तर्गत आता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में लगभग एक अरब लोग हिन्दी भाषा (हिन्दी की दो शैलियों - उर्दू और हिन्दुस्तानी सहित) जानते और बोलते हैं। विश्व के लगभग 15 ऐसे देश हैं जिनमें हिन्दी बोलने वाले दस लाख से एक करोड़ तक लोग हैं, जिनमें नेपाल,बांग्लादेश, पाकिस्तान, मलेशिया, युनाइटेड किंगडम, अमेरिका आदि प्रमुख देश हैं। मॉरीशस की कुल जनसंख्या 12-13 लाख है जिसमें लगभग आठ-नौ लाख लोग हिन्दी बोलते हैं। यही हिन्दी का वैश्विक अथवा अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ है।"

हिन्दी कई कारणों से वैश्विक स्तर तक पहुँची है। उसमें से एक कारण यह है कि विदेशी धरा पर भी बड़ी संख्या में भारतीय हिन्दी भाषी लोग बसते हैं, वहाँ यह उन लोगों की आपसी सम्पर्क भाषा है। वे विदेश की धरा पर हिन्दी में बातचीत कर हिन्दुस्तान व हिन्दी से अपनापन महसूस करते हैं। भारतीय लोग वर्षों पहले किसी कारण से विदेशी धरा पर गए और वहीं बस गए, अत: उन देशों खासकर मॉरिशस, फीजी, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबेगो आदि में इसका प्रयोग होता है। मॉरिशस में तो हिन्दी को लेकर उच्च शिक्षा तक की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। वहीं कई देशों में व्यापार व वाणिज्य के सिलसिले में भारतीयों का जाना हुआ, वहाँ भी उनके साथ हिन्दी ने अपनी दस्तक दी है। हिन्दी के ख्यातनाम कवियों का साहित्य भी आज विदेशी जमीन तक पहुँच चुका है। प्रवासी साहित्य और साहित्यकारों ने भी हिन्दी को वैश्विक स्वरूप प्रदान करने में अपनी महती भूमिका निभाई है।

कोई भी भाषा विदेशी धरा तक अकेले यात्रा नहीं करती। उसके साथ उस देश की सभ्यता, संस्कृति, लोक विश्वास भी तरंगित होते हैं। हिन्दी के साथ भी ऐसा ही हुआ। अपनी वैश्विक यात्रा ने हमारी सभ्यता और संस्कृति ने भी अपनी पहचान विश्व पटल पर बनाई है। करुणा शंकर उपाध्याय अपने लेख 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य' में लिखते हैं कि "जाहिर है कि जब किसी राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में इजाफा पाती है तो उस राष्ट्र की तमाम चीजें स्वत: महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अन्तरराष्ट्रीय हैसियत हिन्दी के लिए वरदान-सदृश है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिन्दी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिन्दी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है।" हिन्दी की समृद्ध पत्रकारिता, धर्म व अध्यात्म चिंतन विषय हिन्दी सामग्री, हिन्दी सिनेमा, जनसंचार के परम्परागत माध्यमों के साथ सोशल मीडिया जैसे नए उपागम हिन्दी को यह स्वरूप प्रदान करने में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। अनुवाद के माध्यम से हिन्दी के प्रतिष्ठित रचनाकारों का साहित्य न केवल भारतीय भाषाओं में अनूदित होकर अपना क्षेत्र विस्तार कर रहा है, बल्कि विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद के माध्यम से अपनी पहुँच वैश्विक स्तर पर सुनिश्चित कर रहा है।

आज सम्पूर्ण विश्व में सौ से अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पठन-पाठन जारी है। गिरमिटिया देशों में भी हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। अनुबंध के आधार पर विदेशी धरा खासतौर पर सूरीनाम, मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद और गुयाना आदि देशों में गए श्रमिक अपने साथ दिल की भाषा हिन्दी को भी साथ ले गए। इन लोगों ने तन का अर्थात् श्रम का अनुबंध तो स्वीकार कर लिया, किन्तु ये कभी भी उनके साथ मन के अनुबंध में नहीं बंधे। इनके मन पर तो सदैव भारतीयता, भारतीय संस्कृति और हिन्दी का ही राज रहा। मृदुल कीर्ति अपने लेख

'गिरमिटिया देशों में हिन्दी' मे ...खती हैं कि - "देवी और देवताओं की विश्वास और श्रद्धापूर्ण कथाएँ, राम, कृष्ण, सुदामा, ध्रुव, श्रवण, प्रहलाद और नैतिक चरित्रों के नाट्य प्रदर्शन, ड्रामा, कहानियाँ, लोकगीत, लोकमान्यताएँ, रामलीलाएँ आदि का प्रदर्शन और श्रवण हिन्दी में ही होता है। दशहरा, दीवाली, ईद का त्योहार पूरे उत्साह और उमंग से मनाया जाता है। सत्संग और रामकथाओं का आयोजन भारत से संतों को बुलाकर किया जाता है। यह हिन्दी की अस्मिता को आत्मसात करने के प्रणम्य प्रमाण है।"

21वीं सदी में हिन्दी ने अपनी सार्थकता और सर्वव्यपकता सिद्ध की है। ज्ञान-विज्ञान के नए क्षेत्रों में हिन्दी ने अपनी दस्तक देकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। चिकित्सा, न्याय, अभियांत्रिकी, विज्ञान आदि क्षेत्रों से जुड़ा साहित्य उपलब्ध होना इस बात का परिचायक है कि हिन्दी से अब कोई क्षेत्र अछूता नहीं है। यदि हम कुछ विगत वर्षों के आँकड़े उठाकर देखें तो हमें पता चलता है कि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। प्रिंट मीडिया ने आज गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी तक अपनी पकड़ बना ली है। आज कई समाचार पत्र ऐसे हैं जिनकी लाखों प्रतियाँ प्रतिदिन छपती और बिकती हैं। बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी पत्रकारिता ने विविध रूपों में अपनी सक्रियता सिद्ध की है। मोबाइल पर आज इंटरनेट की पहुँच आसान हुई है। कभी मोबाइल और इंटरनेट दोनों स्टेटस सिंबल हुआ करते थे। आज इनकी दुनिया प्रत्येक मुट्ठी तक आ गई है। आज ऐसे कई ऐप हैं जिनके माध्यम से हिन्दी में नित नवीन जानकारियाँ विश्व के प्रत्येक कोने तक पहुँच रही हैं। इन सब के माध्यम से हिन्दी का फैलाव भी बढ़ा है।

हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महती भूमिका निभाई है। हिन्दी सिनेमा ने भी आज अपनी वैश्विक छवि बनाई है। उसका योगदान सर्वविदित है। 15 सितम्बर, 2012 के दैनिक भास्कर के नवरंग पृष्ठ पर हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री विषय पर चिंतन करते हुए अनिल राही लिखते हैं कि - "इसने मनोरंजन के माध्यम से जातीय एकता, प्रांतीय एकता, धार्मिक-सांस्कृतिक सद्भावना, व्यावहारिक शिक्षा, जनचेतना, जीवन स्तर के उत्थान आदि क्षेत्रों में जो कार्य किया है, वह आज तक कोई नेता, आंदोलन और सरकारें भी नहीं कर सकीं।" आज एक-एक फिल्म करोड़ों का व्यापार कर रही है। वहीं दूसरी ओर सिनेमा के माध्यम से हिन्दी भी समृद्ध हो रही है। 'सिनेमा और हिन्दी' विषय पर अपने लेख में जयसिंह आजकल पत्रिका के अक्टूबर 2012 के अंक में लिखते हैं कि - "आज बॉलीवुड नाम से मशहूर हिन्दी सिनेमा देश की वैश्विक पहचान बन चुका है। यह हिन्दी सिनेमा ही है, जिसने राष्ट्रभाषा हिन्दी को न सिर्फ देश में जीवित रखा अपितु सुदूर देशों तक इसका प्रचार-प्रसार किया। भाषाई सिनेमा में हिन्दी सिनेमा ही ऐसा है जिसने सभी भाषाई बंदिशों को तोड़ा है और हर दिल अजीज बनकर लोगों के मन-मस्तिष्क पर छा जाने में सफल रहा है।" हिन्दी अब उतार -चढ़ाव के दौर से बाहर आ चुकी है।

आज यह भाषा श्रेष्ठता के सर्वोत्तम पायदान पर है। प्रेमचन्द साहित्य पर भी फिल्में बन चुकी हैं। उनके गोदान, गबन के साथ-साथ सद्गति, हीरा-मोती और शतरंज के खिलाड़ी जैसी कहानियाँ भी फिल्मांकित हो चुकी है। इनके अतिरिक्त मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' पर इसी शीर्षक से, मन्नू भंडारी की रचना 'यही सच है' पर 'रजनीगंधा' शीर्षक से तो कमलेश्वर को 'बदनाम बस्ती', धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', भीष्म साहनी का 'तमस' और निर्मल वर्मा की रचना 'माया दर्पण', भगवतीचरण शर्मा की 'चित्रलेखा' और चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की चर्चित कहानी 'उसने कहा था' पर इन्हीं रचनाओं के शीर्षकों से फिल्में बन चुकी है। हाँ! यह जरूर खेद का विषय है कि सिनेमा के माध्यम से वर्षभर में करोड़ों कमाने वाला यह वर्ग रोजमर्रा में अंग्रेजी को अपनाता है।

ब्लॉग लेखन, ई-पत्रिकाएँ और ई-बुक्स ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार और व्यवहार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। विज्ञापनों का भी हिन्दी से गहरा नाता है। विज्ञापन के बाजार ने भी हिन्दी को अपनी वैश्विक छवि बनाने में अहम भूमिका निभाई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय से जुड़े विविध संस्थानों ने भी हिन्दी को बढ़ावा दिलाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने विविध क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी रूप कोश तैयार करवाये हैं। वहीं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया है। इ. . ऐसी कई योजनाएँ हैं जिनके माध्यम से विदेशी विद्यार्थी हिन्दी सीख रहे हैं।

कहा जा सकता है कि जो हिन्दी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हमारे माथे की बिंदी सिद्ध हुई थी वह आज प्राणवायु ऑक्सीजन की तरह हमारे राष्ट्र के शरीर की प्रत्येक शिरा में संचरण कर रही है। आज हिन्दी केवल साहित्य का विषय रहकर केवल कुछ लेखकों या पाठकों तक ही सीमित नहीं रही वरन् इसका क्षेत्र विस्तृत हुआ है। आज इस हिन्दी ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी पहचान बनाई है। विदेशी धरा पर अब हिन्दी अध्ययन और अध्यापन हो रहा है। यह सब इस बात का द्योतक है कि हिन्दी का आज का स्वरूप वैश्विक संदर्भों से जुड़ा है। हिन्दी का अतीत, वर्तमान गौरवशाली रहा है और भविष्य भी अपार संभावनाओं से युक्त होने के कारण उज्ज्वल है।

सहायक ग्रंथ :

- अनिल राही, हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री, दैनिक भास्कर (नवरंग), 15 सितम्बर 2012, जयपुर संस्करण।
- कमल किशोर गोयनका, सं. हिन्दी भाषा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली, 2015
- कैलाशचन्द भाटिया, हिन्दी : विकास और संभावनाएँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 1996
- जयसिंह, सिनेमा और हिन्दी, आजकल, अक्टूबर 2012
- नवीन नंदवाना (सं.), .. सदी का साहित्य : चिंतन और चुनौतियाँ, बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2015
- माधव सोनटक्के, संपादक : सम्प्रेषणमूलक हिन्दी, ओरियन्ट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, पहला संस्करण, 2010
- रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013
- विमलेश कांति वर्मा, भाषा, साहित्य और संस्कृति, ऑरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली, 2009

ई-15, विश्वविद्यालय आवास, अशोक नगर, उदयपुर
मो. 098283 51618